पुस्तक समीक्षा

संवादधर्मिता साक्षात्कार का सौन्दर्य है

डॉ. सुशील सिद्धार्थ

साक्षात्कार अत्यंत लोकप्रिय और उपयोगी विधा है। पाठक यह अनुभव करता है जैसे वह किसी रचनाकार के सामने बैठकर उससे बातें कर रहा है। उपयोगी इसलिए कि इसमें रचनाकार के 'अंतः साक्ष्य' मिलते हैं। इन साक्ष्यों से रचना संसार को समझने में मदद मिलती है। विद्वान् आदि विधा के नाम पर कहानी या कविता का नाम लेते रहते हैं। मुझे लगने लगा है कि संवाद भी साहित्य की आदि विधा है। कोई भी प्राणी सबसे पहले अपने अकेलेपन को समाप्त करना चाहता है। गालिब जब कहते हैं- 'रहिये अब ऐसी जगह चल कर जहाँ कोई न हो, हरसुखन कोई न हो और हमज़बाँ कोई न हो' तो उनकी त्रासदी समझी जा सकती है। यह असामान्य मनोदशा है। सामान्य स्थिति यह है कि मनुष्य किसी की बात सुनना चाहता है, किसी से कुछ कहना चाहता है। संवाद सभ्यता और संस्कृति का बीज रूप है। इस संवाद और साक्षात्कार ने न जाने कितने रूप बदले हैं, जाने कितने नामों से स्वयं को व्यक्त किया है। आधुनिक साहित्य में साक्षात्कार को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बातचीत, संवाद, आमने-सामने या कुछ और नामों से साक्षात्कार पत्र पत्रिकाओं में छपते हैं. . . . खूब पढ़े जाते हैं।

कुछ पत्रकारों और लेखकों ने साक्षात्कार लेने की कला को एक रचनात्मक हुनर बना लिया है। उन्हें पता है कि किस लेखक से बात करने का सलीका क्या है। संवाद एक सलीका ही तो है। साक्षात्कार का सौन्दर्य है संवादधर्मी होना। . . . ऐसी अनेक विशेषताएँ सुधा ओम ढींगरा द्वारा लिये गये साक्षात्कारों में सहज रूप से उपलब्ध हैं। 'वैश्विक रचनाकारः कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' में मौजूद साक्षात्कार इस विधा की गरिमा को समृद्ध करते हैं। समर्पित रचनाकार सुधा ओम ढींगरा बातचीत करन में दक्ष हैं। वैसे भी जब वे फोन करती हैं तो अपनी मधुर आवाज से वातावरण सरस बना देती हैं। जीवन्तता साक्षात्कार लेने वाले का सबसे बड़ा गुण है। बातचीत को किसी फाइल की तरह निपटा देने से मामला बनता नहीं। सुधा जी को इस विधा में दिलचस्पी है। उन्होंने अनुभव और अध्ययन से इसे विकसित किया है। वे ऐसी लेखक

हैं, जिन्हें टेक्नोलॉजी का महत्त्व पता है। बातचीत करने के लिए आमने-सामने होने के अतिरिक्त उन्होंने फोन, ऑनलाइन और स्काइप का उपयोग किया है। बल्कि आमना-सामना अत्यल्प है। इससे कई बार औपचारिक या किताबी होने का संकट रहता है जो स्वाभाविक है। .. . . लेकिन यह देखकर प्रसन्नता होती है कि सारे साक्षात्कार जीवन्त और दिलचस्प हैं।

अमेरिका, कैनेड़ा, इंग्लैण्ड, आबूधाबी, शारजाह, डेनमार्क और नार्वे के साहित्यकारों से सुधा जी के प्रश्न सतर्क हैं। साहित्यकारों ने भी सटीक उत्तर दिये हैं। यह पुस्तक पाठकों की ज्ञानवृद्धि के साथ उनकी संवेदना का दायरा भी व्यापक करेगी। वैश्विक रचनाशीलता की मानसिकता को यहाँ लक्षित किया जा सकता है। ऐसी पुस्तकें हिन्दी में बहुत कम हैं। शायद न के बराबर। विश्व के अनेक देशों में सक्रिय हिन्दी रचनाकारों के विचार पाठकों तक पहुँचाने के लिए हमें सुधा ओम ढींगरा को धन्यवाद भी देना चाहिए। हिन्दी में कुछ विशेषज्ञ रहे हैं जो साक्षात्कार को रचना बना देते हैं। सुधा जी को देखकर . . उनके काम को पढ़कर और इस विधा के विषय में उनके विचार जानकर उनकी विशेषज्ञता की सराहना की जानी चाहिए।

इस पुस्तक के लिए श्रेष्ठ रचनाकार और संवेदनशील संवादिया सुधा ओम ढींगरा को बहुत-बहुत बधाई। शुभकामनाएँ। यह भरोसा है कि वे अपनी इस यात्रा को अनुद्घाटित दिशाओं में ले जाएँगी। 'वैश्विक रचनाकारः कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ' को पढ़कर प्रवासी लेखन कह कर अनेक लेखकों को हाशिए पर ढकेलने की प्रवृत्ति भी कम होगी।

पुस्तक : वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ (साक्षात्कार)

लेखिका : सुधा ओम ढींगरा, **प्रकाशन** : शिवना प्रकाशना, सीहोर (म.प्र.)

संस्करण : 2013, **मूल्य** : 250 रुपये

❑ बी-2/8बी, केशवपुरम, लारेंस रोड, नई दिल्ली

कमरा नं. 103

– पंकज सुबीर

प्रकाशक– अंतिका प्रकाशन
सी–56 / यूजीएफ–4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन–2,
गाजियाबाद–201005 (उ.प्र.)
मूल्य–150 रुपये।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने पक्ष में बहुत शोर शराबा नहीं करती हैं। ये कहानियाँ बहुत ख़ामोशी के साथ गुजरती हैं। किन्तु इस ख़ामोशी में वो आवश्यक हलचल जरूर है यजो किसी भी कहानी के लिए जरूरी होती है। ये कहानियाँ विमर्श, वाद और उस प्रकार के सभी दूसरे टोटकों से परे अपनी ही एक दुनिया बनाती हैं। वह दुनिया जहाँ बहुत छोटी-छोटी, रोजमर्रा के जीवन से उठाई गई घटनाएँ और अपने ही आस-पास टहलते हुए पात्र होते हैं। यह दुनिया इसीलिए पाठक को बहुत अपनी-सी लगती है। और इसी कारण वह इन कहानियों से कहीं न कहीं एक प्रकार का लगाव-सा महसूस करने लगता है । इन कहानियों के पात्र जीवन से यथारूप उठाकर कहानी में रख दिये जाते हैं । या यूँ कहें कि ये पात्र स्वयं ही टहलते हुए सुधा जी की कहानियों में चले आते हैं । पात्रों की सहजता इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता होती है । किन्तु इस सहजता के बावजूद कहानी, सरोकारों के प्रति सजग बनी रहती है । लेखिका की सजगता और पात्रों की सहजता के मेल से जो परिणाम सामने आता है वह पाठक को बाँध लेता है ।

समलैंगिकता पर क़लम चलाने में पुरुष लेखक ही डरते रहे हैं ऐसे में कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों है' लिखना और वह भी पूरी ज़िम्मेदारी से लिखना । कहानी का शीर्षक पूरी की पूरी कहानी में प्रतिध्वनित होता रहता है । एक रहस्यमय अँधेरी दुनिया के कुछ परदों को उठाने का प्रयास लेखिका ने बहुत सफलता के साथ किया है । कहानी उन सारी समस्याओं की बात करती है जो समलैंगिकता से जुड़ी हैं । और इस समस्या का वैज्ञानिक पक्ष भी तलाशने की कोशिश करती है । रसायनों के खेल के माध्यम से समलैंगिकता और विषमलैंगिकता की अबूझ पहेली का हल तलाशने की कहानी है यह । लेखिका ने कहानी को पूरी तैयारी के साथ लिखा है । कहानी को इस विषय पर लिखी गई श्रेष्ठ कहानियों में रखा जा सकता है ।

इन दिनों बड़े बड़े विषयों पर बड़ी बड़ी कहानियाँ, बड़े ताम -झाम के साथ लिखने का चलन -सा हो गया है । जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानी का विषय नहीं बन पा रही हैं । जबकि पाठक इनको ही अधिक पसंद करता है । ऐसे में और बाड़ बन गई जैसी कहानियाँ पाठक को राहत प्रदान करती हैं । बहुत छोटी -सी घटना, जिसमें नया पड़ोसी अपने घर के चारों तरु बाड़ लगवा रहा है । उस बाड़ को प्रतीक बना कर मानव मनोविज्ञान की खूब पड़ताल कर ली गई है । कहानी भले ही अमेरिका में चलती है, किन्तु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश भले ही कोई -सा भी हो । ये कहानी अपनी पूरी सरलता के साथ अपने आप को पाठक से पढ़वा ले जाती है । पाठक बाड़ के बहाने चल रहे विमर्श का पूरा आनंद लेता है और कहानी से जुड़ा रहता है । बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका ने अद्‌भुत विस्तार दिया है । ये प्रतीक जाने कहाँ कहाँ से गुजरता है अपने निशान छोड़ता हुआ ।

कमरा नंबर 103 बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है । टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मूक पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी ामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं । ये भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है जिसमें एक पात्र भले ही कोमा में है किन्तु संवाद बराबर कर रहा है । उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं । दूसरी तरफ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से समस्या के मूल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती है । ये जो दो समानांतर रूप से चल रही घटनाएँ हैं ये कहानी को रोचक बनाए रखती हैं । मिसेज वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी और एमी । कहानी के अंत में मिसेज वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती हैं, मगर अपने ही तरीके से । कहानी मन को छू जाती है ।

टारनेडो लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है । ये कहानी भारत से अमेरिका के बीच में पेंडुलम की तरह डोलती है । और इस डोलने के बीच कई बिंदुओं को छूती है । यह कहानी भारतीय परम्पराओं की स्थापना की कहानी है । लेखिका ने पाश्चात्य जीवन शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है । उन्मुद्रता और मर्यादा के हानि लाभों को खोला गया है इस कहानी में । मिसेज शंकर एबनार्मल हैं, यह वाक्य भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है । बरसों-बरस से भारतीयों को एबनार्मल बताकर उन्हें संस्कारित

करने का प्रयास पश्चिम द्वारा होता रहा है । यह कहानी उन सारे प्रयासों का एक सुदृढ़ तथा सटीक उत्तर है । उत्तर जो उसी भाषा में दिया गया है जिस भाषा में प्रश्न होता है । लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है ।

'वह कोई और थी' कहानी एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है । विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिए अपने साथी की हर बात को सहन करना । ये कहानी का एक पक्ष है, किन्तु, दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि ये विवाह नागरिकता लेने के लिए न होकर प्रेम के चलते किया गया हो तो....? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थायी नगारिकता जैसे तकनीकी शब्दों के अर्थ कहानी में आम पाठक के लिए सरलता से आते हैं । ये कहानी एक अलग प्रकार के पुरुष- विमर्श की कहानी है । पुरुष -विमर्श , जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है । समलैंगिकता के बाद पुरुष विमर्श पर कहानी लिख कर लेखिका ने मानो निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है । हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श नाम पर जो एकपक्षीय लेखन पिछले कई दिनों से चल रहा है उसका प्रतिकार है ये कहानी ।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने अनोखे विषयों के लिये चर्चित रहती हैं और इस संग्रह की कहानियों में भी वह विविधता, वह अनोखापन है । नये और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिए चुनने की लेखिका की जिद उनकी कहानियों को भीड़ से अलग बनाती है। और इस संग्रह की कहानियों में भी वो जिद लगभग हर कहानी में नजर आती है ।

– पी.सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर मध्यप्रदेश 46600।

छब्बीस : अक्टूबर-दिसम्बर, 2013

ISSN : 2278-2338

अक्सर

मानव संघर्ष की रचनात्मक अभिव्यक्ति

राजेन्द्र यादव

(1929-2013)

कहानियों की भीड़ से अलग कहानियाँ

पंकज सुबीर

डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा की कहानियाँ अपने पक्ष में बहुत शोर शराबा नहीं करती हैं। ये कहानियाँ बहुत खामोशी के साथ गुजरती हैं। किन्तु इस खामोशी में वो आवश्यक हलचल जरूर हैं जो किसी भी कहानी के लिये जरूरी होती हैं। ये कहानियाँ विमर्श, वाद और उस प्रकार के सभी दूसरे टोटकों से परे अपनी ही एक दुनिया बनाती हैं। वो दुनिया जहां बहुत छोटी-छोटी रोजमर्रा के जीवन से उठाई गई घटनाऐं और अपने ही आस पास टहलते हुए पात्र होते हैं। ये दुनिया इसीलिये पाठक को बहुत अपनी सी लगती है। और इसी कारण वो इन कहानियों से कहीं न कहीं एक प्रकार का लगाव सा महसूस करने लगता है। इन कहानियों के पात्र जीवन से यथारूप उठा कर कहानी में रख दिये जाते हैं। या यूँ कहें कि ये पात्र स्वयं ही टहलते हुए सुधा जी की कहानियों में चले आते हैं। पात्रों की सहजता इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता होती है। किन्तु इस सहजता के बावजूद कहानी, सरोकारों के प्रति सजग बनी रहती हैं। लेखिका की सजगता और पात्रों की सहजता के मेल से जो परिणाम सामने आता है वो पाठक को बाँध लेता है।

समलैंगिकता पर क़लम चलाने में पुरुष लेखक ही डरते रहे हैं ऐसे में कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों है' लिखना और वो भी पूरी जिम्मेदारी से लिखना। कहानी का शीर्षक पूरी की पूरी कहानी में प्रतिध्वनित होता रहता है। एक रहस्यमय अंधेरी दुनिया के कुछ परदों को उठाने का प्रयास लेखिका ने बहुत सफलता के साथ किया है। कहानी उन सारी समस्याओं की बात करती है जो समलैंगिकता से जुड़ी हैं। और इस समस्या का वैज्ञानिक पक्ष भी तलाशने की कोशिश करती है। रसायनों के खेल के माध्यम से समलैंगिकता और विषमलैंगिकता की अबूझ पहेली का हल तलाशने की कहानी है ये। लेखिका ने कहानी को पूरी तैयारी के साथ लिखा है। कहानी को इस विषय पर लिखी गई श्रेष्ठ कहानियों में रखा जा सकता है।

इन दिनों बड़े-बड़े विषयों पर बड़ी बड़ी कहानियाँ, बड़े ताम झाम के साथ लिखने का चलन सा हो गया है। जीवन की छोटी-छोटी घटनाएं कहानी का विषय नहीं बन पा रही हैं। जबकि पाठक इनको ही अधिक पसंद करता है। ऐसे में 'और बाड़ बन गई' जैसी कहानियाँ पाठक को राहत प्रदान करती हैं। बहुत छोटी सी घटना, जिसमें नया पड़ोसी अपने घर के चारों तरफ बाड़ लगवा रहा है। उस बाड़ को प्रतीक बना कर मानव मनोविज्ञान की खूब पड़ताल कर ली गई। कहानी भले ही अमेरिका में चलती है किन्तु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश भले ही कोई सा भी हो। ये कहानी अपनी पूरी सरलता के साथ अपने आप को पाठक से पढ़वा ले जाती है। पाठक बाड़ के बहाने चल रहे विमर्श का पूरा आनंद लेता है और कहानी से जुड़ा रहता है। बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका ने अद्भुत विस्तार दिया है। ये प्रतीक जाने कहाँ कहाँ से गुजरता है अपने निशान छोड़ता हुआ।

'कमरा नंबर 103' बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मूक पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी खामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं। ये भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है। जिसमें एक पात्र भले ही कोमा में है कि किन्तु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं। दूसरी तरफ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से समस्या के मूल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती है। ये जो दो समानान्तर रूप से चल रही घटनाएँ हैं ये कहानी को रोचक बनाए रखती हैं। मिसेज वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी ओर एमी। कहानी के अंत में मिसेज वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती हैं, मगर अपने ही तरीके से। कहानी मन को छू जाती है।

टारनेडो लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है। ये कहानी भारत से अमेरिका के बीच में पेंडुलम की तरह डोलती है। और इस डोलने के बीच कई बिंदुओं को छूती है। यह कहानी भारतीय परंपराओं की स्थापना की कहानी है। लेखिका ने पाश्चात्य जीवन शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है। उन्मुक्तता और मर्यादा के हानि लाभों को खोला गया है इस कहानी में। मिसेज शंकर एबनार्मल हैं, ये वाक्य भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है। बरसों से भारतीयों को एबनार्मल बता कर उन्हें संस्कारित करने का प्रयास होता है। लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है।

वह कोई और थी कहानी एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है। विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिये अपने

साथी की हर बात को सहन करना। ये कहानी का एक पक्ष है, किन्तु, दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि वे विवाह नागरिकता लेने के लिये न होकर प्रेम के चलते किया गया हो तो. . . ? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थाई नागरिकता जैसे तकनीकी शब्दों के अर्थ कहानी में आम पाठक के लिये सरलता से आते हैं। ये कहानी एक अलग प्रकार के पुरुष विमर्श की कहानी है। पुरुष विमर्श, जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है। समलैंगिकता के बाद पुरुष विमर्श पर कहानी लिख कर लेखिका ने मानो निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श नाम पर जो एकपक्षीय लेखन पिछले कई दिनों से चल रहा है उसका प्रतिकार है ये कहानी।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने अनोखे विषयों के लिये चर्चित रहती है। और इस संग्रह की कहानियों में भी वो विविधता, वो अनोखापन है। नये और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिये चुनने की लेखिका की जिद उनकी कहानियों को भीड़ से अलग बनाती है और इस संग्रह की कहानियों में भी वो जिद लगभग हर कहानी में नज़र आती है।

पी.सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर मध्यप्रदेश 466001

करती रहती हैं। 'मुन्नी की पुनर्रचना' में यथार्थ बड़ा विश्वसनीय लगा तो है और मन को कचोटता है। असफल प्रेम की यह प्रभावशाली कहानी है। शीर्षक कथा 'पाप पुण्य से परे' की नायिका के मन में प्रेम का आग्रह इतना प्रबल कि पाठक स्तब्ध रह जाता है। लेखक ने बड़ी बेबाकी से नारी को आदर्श की चौखट से मुक्त करके मानवीय तौर पर उसके संवेगों का चित्रण किया है। 'शायद वह आ जाए' की नायिका बोल्ड और आत्मबोध से संपन्न है। समाज द्वारा पैरों में बबेड़ियाँ डाले जाने के बावजूद कुआँरी माँ बनने का साहसपूर्ण फैसला करती है। पुस्तक में अनेक पुरुष पात्र, उद्दाम प्रेम के लिए वर्जनाओं को तोड़ती इन नारी पात्रों के आवेग और मुखर अभिव्यक्ति के आगे बौने नज़र आते हैं। लेखक ने पुरुष होकर जिस ईमानदारी और सहिष्णुता से इन स्त्री पात्रों को गढ़ा है उसके लिए साधुवाद।

अपनी सुबोध सहज शैली के कारण पुस्तक 'पापपुण्य से परे' हर वर्ग के लिए पठनीय और बोधगम्य है। लेखक ने सुनी सुनाई घटनाओं को खूबसूरत शिल्प के ताने-बाने में ऐसे कसा है कि कहीं कोई शिकन नज़र नहीं आती। अक्षर पाठक की आँखों से कुलाँचे भरते जाते हैं और एक ही आसन पर कई कहानियों का पठन क्लान्त नहीं करता। कहीं कहीं पात्रों का नाम लिए बिना पूरी कहानी कही गई है। 'प्यार देंगे दिल का दर्द लेंगे' में कुछ चालीस- पचास खतों के अंश है। इन खतों में उल्लेखित संदर्भ की घटनाओं के सूत्र जोड़ते चलते हैं। बतकही का यह नवीन प्रयोग है। किंतु इस कारण कहीं कहीं कथानक एक रस या बोझिल भी लगता है। ज्यातर कहानियों में भूमिका देकर लेखक नेपथ्य में चले जाते हैं और कुछेक में बीच बीच में उनका संभाषण है जो अतीत से वर्तमान और वर्तमान से अतीत की यात्रा कराता चलता है। कहानियों में विकीर्ण शब्दचित्र दर्शनीय हैं-

"तबाह हुए घर का दरवाजा किस कदर सहमा सहमा और खामोश होता है मानो दरवाजा न हो, फंदे में झूलता शव हो। चूँ तक नहीं करता।"

"ऊँची ऊँची तीन कुर्सियाँ हैं। अलग अगल साइज की। उनकी उम्र पर्त-दर-पर्त उनकी सतहों पर चिपक गई है। चकत्ता चकत्ता मैल के धट्टे बनकर।"

'मुन्नी की पुनर्रचना' शीर्ष कथा-'पाप से परे' 'शायद वो आ जाए' और 'कलाकार का प्रेम' पुस्तक की श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। जो देर तक चलचित्र की मानिन्द पाठक के जहन में तिरती रहती है। और प्रेम को विभिन्न रूपों में परिभाषित करती हैं।

आधुनिक महानगरीय जीवन में स्त्री-पुरुष संबंधों को एक 'डील' के रूप में आँका जा रहा है। प्रेम के मायने सिर्फ दैहिक जुड़ाव पर आकर सिमट गए हैं। हीर राँझा, लैला मजनूँ की कथाएँ कपोलकल्पित लगने लगी हैं। ऐसे में राजेन्द्र राव की कहानियाँ प्रेम का पौराणिक आख्यान प्रतीत होती हैं जिनका सूत्र थाम कर युवा पाठक प्रेम के अतल सागर की पैठ ले सकते हैं।

आज शिक्षित महत्त्वाकांक्षी तरुणी भी उन्मीलित चक्षुओं से प्रेमी का चयन करती है पुरुषों की बात तो दरकिनार है। 'प्यार अंधा होता है' प्यार किया नहीं जाता हो जाता है'- जैसी प्रेम दीवानों की तहरीरें आज के परिप्रेक्ष्य में धूमिल पड़ती जा रही है। किंतु इस पुस्तक के विषय में कहा जा सकता है कि 'प्रेम अंधा होता है' -इस जुमले को चरितार्थ करती अपनी कहानियों के कारण यह अंध प्रेम का एक मूल्यवान दस्तावेज़ बन गई है।■

पता : सी/43, जगत अमरावती अपार्टमेंट, बेली रोड, पटना-800001
मो. : 09334708478

पाप पुण्य से परे (कहानी संग्रह), ले. राजेन्द्र राव, प्र. किताबघर, 4855/24 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 170, मूल्य रु. 250/-

कहानियों की भीड़ से अलग कहानियाँ

○ पंकज सुबीर

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने पक्ष में बहुत शोर शराबा नहीं करती हैं। ये कहानियाँ बहुत ख़ामोशी के साथ गुजरती हैं। किन्तु इस ख़ामोशी में वो आवश्यक हलचल ज़रूर है जो किसी भी कहानी के लिये ज़रूरी होती है। ये कहानियाँ विमर्श, वाद और उस प्रकार के सभी दूसरे टोटकों से परे अपनी ही एक दुनिया बनाती हैं। वो दुनिया जहाँ बहुत छोटी छोटी, रोज़मर्रा के जीवन से उठाई गई घटनाएँ और अपने ही आस पास टहलते हुए पात्र होते हैं। ये दुनिया इसीलिये पाठक को बहुत अपनी सी लगती है। और इसी कारण वो इन कहानियों से कहीं न कहीं एक प्रकार का लगाव सा महसूस करने लगता है। इन कहानियों के पात्र जीवन से यथारूप उठा कर कहानी में रख दिये जाते हैं। या यूँ कहें कि ये पात्र स्वयं ही टहलते हुए सुधा जी की कहानियों में चले आते हैं। पात्रों की सहजता इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता होती है। किन्तु इस सहजता के बावजूद कहानी, सरोकारों के प्रति सजग बनी रहती है। लेखिका की सजगता और पात्रों की सहजता के मेल से जो परिणाम सामने आता है वो पाठक को बाँध लेता है।

समलैंगिकता पर क़लम चलाने में पुरुष लेखक ही डरते रहे हैं ऐसे में कहानी आग में गर्मी कम क्यों है लिखना और वो भी पूरी ज़िम्मेदारी से लिखना। कहानी का शीर्षक पूरी की पूरी कहानी में प्रतिध्वनित होता रहता है। एक रहस्मय अंधेरी दुनिया के कुछ परदों को उठाने का प्रयास लेखिका ने बहुत सफलता के साथ किया है। कहानी उन सारी समस्याओं की बात करती है जो समलैंगिकता से जुड़ी हैं। और इस समस्या का वैज्ञानिक पक्ष भी तलाशने की कोशिश करती है। रसायनों के खेल के माध्यम से समलैंगिकता और विषमलैंगिकता की अबूझ पहेली का हल तलाशने की कहानी है ये। लेखिका ने कहानी को पूरी तैयारी के साथ लिखा है। कहानी को इस विषय पर लिखी गई श्रेष्ठ कहानियों में रखा जा सकता है।

इन दिनों बड़े बड़े विषयों पर बड़ी बड़ी कहानियाँ, बड़े तामझाम के साथ लिखने का चलन सा हो गया है। जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानी का विषय नहीं बन पा रही हैं। जबकि पाठक इनको ही अधिक पसंद करता है। ऐसे में और बाड़ बन गई जैसी कहानियाँ पाठक को राहत प्रदान करती हैं। बहुत छोटी सी घटना, जिसमें नया पड़ोसी अपने घर के चारों तरफ बाड़ लगवा रहा है। उस बाड़ को प्रतीक बना कर मानव मनोविज्ञान की खूब पड़ताल कर ली गई है। कहानी भले ही

अमेरिका में चलती है किन्तु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश भले ही कोई सा भी हो। ये कहानी अपनी पूरी सरलता के साथ अपने आप को पाठक से पढ़वा ले जाती है। पाठक बाड़ के बहाने चल रहे विमर्श का पूरा आनंद लेता है और कहानी से जुड़ा रहता है। बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका ने अद्‌भुत विस्तार दिया है। ये प्रतीक जाने कहाँ कहाँ से गुज़रता है अपने निशान छोड़ता हुआ।

कमरा नंबर 103 बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मूक पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी ख़ामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं। ये भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है जिसमें एक पात्र भले ही कोमा में है किन्तु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं। दूसरी तरफ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से समस्या के मूल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती है। ये जो दो समानांतर रूप से चल रही घटनाएँ हैं ये कहानी को रोचक बनाए रखती हैं। मिसेज वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी और एमी। कहानी के अंत में मिसेज वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती हैं, मगर अपने ही तरीके से। कहानी मन को छू जाती है।

टारनेडो लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है। ये कहानी भारत से अमेरिका के बीच में पेंडुलम की तरह डोलती है। और इस डोलने के बीच कई बिंदुओं को छूती है। यह कहानी भारतीय परंपराओं की स्थापना की कहानी है। लेखिका ने पाश्चात्य जीवन शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है। उन्मुक्तता और मर्यादा के हानि लाभों को खोला गया है इस कहानी में। मिसेज शंकर एबनार्मल हैं, ये वाक्य भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है। बरसों बरस से भारतीयों को एबनार्मल बता कर उन्हें संस्कारित करने का प्रयास पश्चिम द्वारा होता रहा है। ये कहानी उन सारे प्रयासों का एक सुदृढ़ तथा सटीक उत्तर है। उत्तर जो उसी भाषा में दिया गया है जिस भाषा में प्रश्न होता है। लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है।

वह कोई और थी कहानी एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है। विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिये अपने साथी की हर बात को सहन करना। ये कहानी का एक पक्ष है, किन्तु, दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि ये विवाह नागरिकता लेने के लिये न होकर प्रेम के चलते किया गया हो तो....? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थाई नगारिकता जैसे तकनीकी शब्दों के अर्थ कहानी में आम पाठक के लिये सरलता से आते हैं। ये कहानी एक अलग प्रकार के पुरुष विमर्श की कहानी है। पुरुष विमर्श, जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है। समलैंगिकता के बाद पुरुष विमर्श पर कहानी लिख कर लेखिका ने मानो निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श नाम पर जो एकपक्षीय लेखन पिछले कई दिनों से चल रहा है उसका प्रतिकार है ये कहानी।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने अनोखे विषयों के लिये चर्चित रहती हैं और इस संग्रह की कहानियों में भी वो विविधता, वो अनोखापन है। नये और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिये चुनने की लेखिका की ज़िद उनकी कहानियों को भीड़ से अलग बनाती है। और इस संग्रह की कहानियों में भी वो ज़िद लगभग हर कहानी में नज़र आती है। ■

पता : पी.सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट बस स्टैंड के सामने, सीहोर मध्यप्रदेश 466001
दूरभाष 9977855399 ईमेल : subeerin@gmail.com

कमरा नंबर 103 (कहानी संग्रह), ले. सुधा ओम ढींगरा, प्र. हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, पृ. 95, मूल्य रु. 50/-

श्रम और संघर्ष की स्वानुभूति का सच 'एक कस्बे के नोट्स'

○ अनिल राय

नीलेश रघुवंशी ने कविता, नाटक, वृत्तचित्र आलोचना आदि अनेक विधाओं में अपनी सर्जनात्मक क्षमता द्वारा एक खास पहचान बनाई है। इसी कड़ी में उनकी अगली उपलब्धि 'एक कस्बे के नोट्स' है।

आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास निम्न मध्यवर्गीय कस्बाई परिवारों के यथार्थ को बड़ी ईमानदारी के साथ बयां करता है। वस्तुतः कस्बाई जीवन की परिधि इतनी व्यापक होती है कि उसका एक छोर गाँव तक होता है तो दूसरा शहरों से होता हुआ महानगरों तक जा पहुँचता है। यही बजह है कि यह उपन्यास विषय-वस्तु एवं संवेदना की व्यापकता को समेटे हुए समूचे उत्तर भारत के निम्न मध्यवर्गीय जीवन का लेखा-जोखा जान पड़ता है।

समीक्ष्य उपन्यास का ताना-बाना मध्य प्रदेश के छोटे से कस्बे गंज बासौदा की पृष्ठभूमि में तैयार हुआ है। मोटे तौर पर उपन्यास के तीन मुख्य केंद्र हैं जिनके इर्द-गिर्द पूरी कथा घूमती चलती है। इसका एक केंद्र लेखिका स्वयं है, दूसरा उसके पिता और तीसरा ढाबा जो न केवल दोनों के श्रम-संघर्ष का साक्षी है बल्कि पूरे उपन्यास की धड़कन का स्रोत भी है। नायिका के दादा अंग्रेजी शासन में एक सौ पचास बीघा जमीन के मालिक थे। तहसीलदार से टैक्स को लेकर हुई कहा सुनी ने विवाद का रुप ले लिया जिसमें उन्होंने तहसीलदार को चाँटा मार दिया। परिणाम यह हुआ कि उनकी सारी जमीन नीलाम हो गई। किंतु स्वाभिमानी दादा जी ने झुकना स्वीकार नहीं किया।

उपन्यास में नायिका के पिता और स्वयं उसे यही स्वाभिमान विरासत में मिला है। आजीविका हेतु पिता ने गंज बासौदा नामक कस्बे में ढाबा खोल लिया। नौ बच्चों सहित ग्यारह सदस्यों वाले परिवार का भरण-पोषण पिता के लिए चुनौती भरा काम था, जिसे उसने अपनी कठिन साधना एवं संकल्प के बल पर स्वीकार किया। यहाँ पिता के रुप में नीलेश ने एक ऐसे चरित्र को रखा है जो प्रगतिशील है, घोर कर्मवादी है श्रम साधना की भट्ठी में दिन-रात स्वयं को झोंके रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि उसे अपने जीवन और भाग्य से कोई शिकायत नहीं है। निम्न मध्यवर्गीय मेहनतकश समाज का वह चेहरा है जो रोज़ी-रोटी के लिए रोज जूझता है तथा अभावों को पराजित करने में की जद्दोजहद

कहानियों की भीड़ से अलग कहानियां

• पंकज सुबीर

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियां अपने पक्ष में बहुत शोर-शराबा नहीं करती हैं। ये कहानियां बहुत खामोशी के साथ गुजरती हैं। किंतु इस ख़ामोशी में वो आवश्यक हलचल ज़रूर है जो किसी भी कहानी के लिए ज़रूरी होती है। ये कहानियां विमर्श, वाद और उस प्रकार के सभी दूसरे टोटकों से परे अपनी ही एक दुनिया बनाती हैं। वो दुनिया जहां बहुत छोटी-छोटी, रोज़मर्रा के जीवन से उठाई गई घटनाएं और अपने ही आसपास टहलते हुए पात्र होते हैं।

समलैंगिकता पर कलम चलाने में पुरुष लेखक ह ही डरते रहे हैं। ऐसे में कहानी 'आग' में गर्मी कम क्यों है लिखना और वो भी पूरी ज़िम्मेदारी से लिखना। कहानी का शीर्षक पूरी की पूरी कहानी में प्रतिध्वनित होता रहता है। एक रहस्यमय अंधेरी दुनिया के कुछ परदों को उठाने का प्रयास लेखिका ने बहुत सफलता के साथ किया है। कहानी उन सारी समस्याओं की बात करती है जो समलैंगिकता से जुड़ी हैं। और इस समस्या का वैज्ञानिक पक्ष भी तलाशने की कोशिश करती है। रसायनों के खेल के माध्यम से समलैंगिकता और विषमलैंगिकता की अबूझ पहेली का हल तलाशने की कहानी है ये। लेखिका ने कहानी को पूरी तैयारी के साथ लिखा है। कहानी को इस विषय पर लिखी गई श्रेष्ठ कहानियों में रखा जचा सकता है।

इन दिनों बड़े विषयों पर बड़ी-बड़ी कहानियां, बड़े तामझाम के साथ लिखने का चलन सा हो गया है। जीवन की छोटी-छोटी घटनाएं कहानी का विषय नहीं बन पा रही हैं। जबकि पाठक इनको ही अधिक पसंद करता है। ऐसे में 'और बाड़ बन गई' जैसी कहानियां पाठक को राहत प्रदान करती हैं। बहुत छोटी-सी घटना, जिदसमें नया पड़ोसी अपने घर के चारों तरफ बाड़ लगाता लगवा रहा है। उस बाड़ को प्रतीक बना कर मानव मनोविज्ञान की खूब पड़ताल कर ली गई है। कहानी भले ही अमेरिका में चलती है किंतु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश

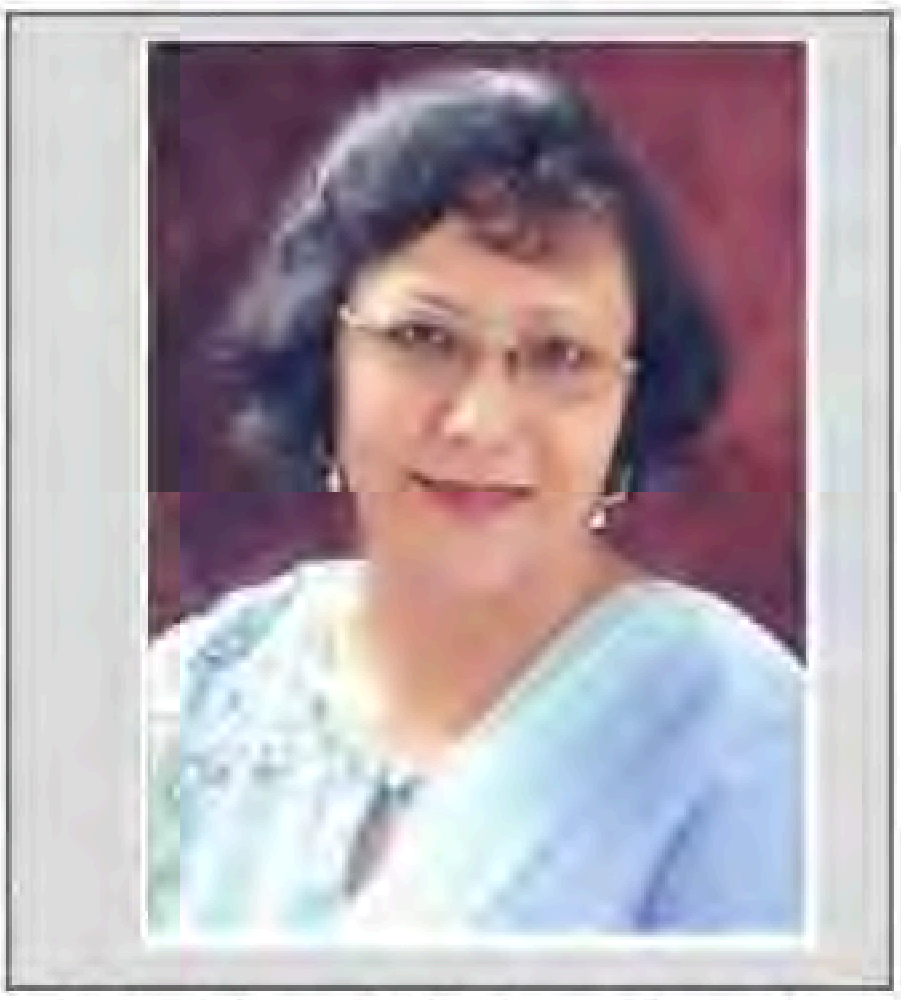

भले ही कोई सा भी हो। ये कहानी अपनी पूरी सरलता के साथ अपने आप को पाठक से पढ़वा ले जाती है। पाठक बाड़ के बहाने चल रहे विमर्श का पूरा आनंद लेता है, और कहानी से जुड़ा रहता है। बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका अद्भुत विस्तार दिया है। ये प्रतीक जाने कहां-कहां से गुज़रता है अपने निशान छोड़ता हुआ।

कमरा नंबर 103 बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मक पात्र मिसेज़ वर्मा कहानी में उपस्थित है। उसकी ख़ामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं। ये भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है जिसमें पात्र भले ही कोमा में है किंतु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की की तरह होते हैं। दूसरी तरफ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से समस्या के हल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती है। ये जो दो समानांतर रूप से चल रही घटनाएं हैं, ये कहानी को रोचक बनाए रखती हैं। मिसेज़ वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी और एमी। कहानी के अंत में मिसेज़ वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती हैं, मगर अपने तरीके से। कहानी मन को छू जाती है।

'टारनेडो' लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है। ये कहानी भारत से अमेरिका के बीच में पेंडुलम की तरह डोलती है। और इस डोलने के बीच कई बिंदुओं को छूती है। यह कहानी भारतीय परंपराओं की स्थापना की कहानी है। लेखिका ने पाश्चात्य जीवन शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है। उन्मुक्तता और मर्यादा के हानि-लाभों को खोला गया है इस कहानी में। मिसेज़ शंकर एबनॉर्मल हैं, ये वाक्य भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है। बरसों बरस से भारतीयों को एबनॉर्मल बता कर उन्हें संस्कारित करने का प्रयास पश्चिम द्वारा होता रहा है। ये कहानी उन सारे प्रयासों का एक सुदृढ़ सटीक उत्तर है। उत्तर जो उसी भाषा में दिया गया है जिस भाषा में प्रश्न होता है। लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है।

'वह कोई और थी' कहानी एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है। विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिए अपने साथी की हर बात को सहन करना। ये कहानी का एक पक्ष है, किंतु दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि ये विवाह नागरिकता लेने के लिए न हो कर प्रेम के चलते किया गया हो तो...? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थायी नागरिकता जैसे तकनीकी शब्दों के अर्थ कहानी में आम पाठक के लिए सरलता से आते हैं। ये कहानी एक अलग प्रकार के पुरुष विमर्श की कहानी है। पुरुष विमर्श, जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है। समलैंगिकता के बाद पुरुष विमर्श पर कहानी लिखकर लेखिका ने मानों निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के नाम पर एकपक्षीय लेखन पिछले कई दिनों से चल रहा है। उसका प्रतिकार है ये कहानी।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियां अपने अनोखे विषयों के लिए चर्चित रहती हैं और इस संग्रह की कहानियों में भी वो विविधता व अनोखापन है। नए और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिए चुनने की लेखिका ज़िद उनकी कहानियों को भीड़ से अलग बनाती हैं। और इस संग्रह की कहानियों में भी वो ज़िद लगभग हर कहानी में नज़र आती है।

- पी.सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्यप्रदेश 466 001, मो. +91 99 77 85 5399

साक्षात्कार

अंक : 408, दिसंबर 2013

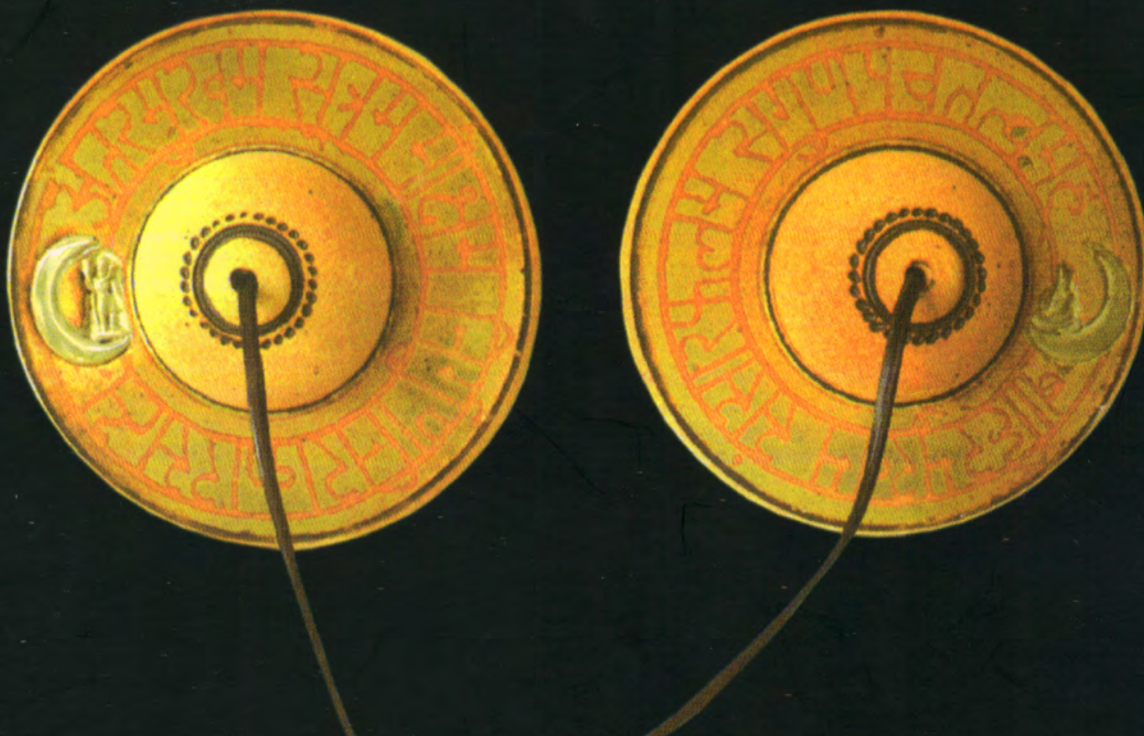

पंकज सुबीर

कहानियों की भीड़ से अलग कहानियाँ

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने पक्ष में बहुत शोर शराबा नहीं करती हैं। ये कहानियाँ बहुत खामोशी के साथ गुजरती हैं। किंतु इस खामोशी में वह आवश्यक हलचल जरूर है जो किसी भी कहानी के लिए जरूरी होती है। ये कहानियाँ विमर्श, वाद और उस प्रकार के सभी दूसरे टोटकों से परे अपनी ही एक दुनिया बनाती हैं। ये दुनिया जहाँ बहुत छोटी-छोटी, रोजमर्रा के जीवन से उठाई गई घटनाएँ और अपने ही आस-पास टहलते हुए पात्र होते हैं। ये दुनिया इसीलिए पाठक को बहुत अपनी सी लगती हैं। और इसी कारण वह इन कहानियों से कहीं न कहीं एक प्रकार का लगाव सा महसूस करने लगता है। इन कहानियों के पात्र जीवन से यथा रूप उठा कर कहानी में रख दिए जाते हैं। या यूँ कहें कि ये पात्र स्वयं ही टहलते हुए सुधा जी में चले आते हैं। पात्रों की सहजता इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता होती है। किंतु इस सहजता के बावजूद कहानी, सरोकारों के प्रति सजग बनी रहती है। लेखिका की सजगता और पात्रों की सहजता के मेल से जो परिणाम सामने आता है वह पाठक को बाँध लेता है। समलैंगिकता पर कलम चलाने में पुरुष लेखक ही डरते रहे हैं ऐसे में कहानी आग में गर्मी कम क्यों है लिखना और वह भी पूरी जिम्मेदारी से लिखना। कहानी का शीर्षक पूरी की पूरी कहानी में प्रतिध्वनित होता रहता है। एक रहस्यमय अँधेरी दुनिया के कुछ परदों को उठाने का प्रयास लेखिका ने बहुत सफलता के साथ किया है। कहानी उन सारी समस्याओं की बात करती है जो समलैंगिकता से जुड़ी है और इस समस्या का वैज्ञानिक पक्ष भी तलाशने की कोशिश करती है। रसायनों के खेल के माध्यम से समलैंगिकता और विषमलैंगिकता की अबूझ पहेली का हल तलाशने की कहानी है ये। लेखिका ने कहानी को पूरी तैयारी के साथ लिखा है। कहानी को इस विषय पर लिखी गई श्रेष्ठ कहानियों में रखा जा सकता है।

इन दिनों बड़े-बड़े विषयों पर बड़ी-बड़ी कहानियाँ, बड़े ताम-झाम के साथ

'कमरा नंबर 103' बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मूक पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी खामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं। यह भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है जिसमें एक पात्र भले ही कोमा में है किंतु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं।

पुस्तक : कमरा नंबर 103, लेखक : सुधा ओम ढींगरा
प्रकाशक : हिंदी साहित्य निकेतन, मूल्य : रुपये 150/-

लिखने का चलन सा हो गया है। जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानी का विषय नहीं बन पा रही हैं। जबकि पाठक इनको ही अधिक पसंद करता है। ऐसे में और बाड़ बन गई जैसी कहानियाँ पाठक को राहत प्रदान करती हैं। बहुत छोटी सी घटना, जिसमें नया पड़ोसी अपने घर के चारों तरफ बाड़ लगवा रहा है। उस बाड़ को प्रतीक बना कर मानव मनोविज्ञान की खूब पड़ताल कर ली गई है। कहानी भले ही अमेरिका में चलती है किंतु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश भले ही कोई सा भी हो। ये कहानी अपनी सरलता के साथ अपने आप को पाठक से पढ़वा ले जाती है। पाठक बाड़ के बहाने चल रहे हैं विमर्श का पूरा आनंद लेता है और कहानी से जुड़ा रहता है। बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका ने अद्भुत विस्तार दिया है। ये प्रतीक जाने कहाँ-कहाँ से गुजरता है अपने निशान छोड़ता हुआ।

'कमरा नंबर 103' बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मूक पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी खामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं। यह भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है जिसमें एक पात्र भले ही कोमा में है किंतु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं। दूसरी तरफ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से समस्या के मूल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती हैं। ये जो दो समानांतर रूप से चल रही घटनाएँ हैं ये कहानी को रोचक बनाए रखती है। मिसेज वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी और एमी। कहानी के अंत में मिसेज वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती है, मगर अपने ही तरीके से। कहानी मन को छू जाती है।

'टारनेडो' लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है। ये कहानी भारत से अमेरिका के बीच में पेंडुलम की तरह डोलती है। और इस डोलने के बीच कई बिंदुओं को छूती है। यह कहानी भारतीय परंपराओं की स्थापना की कहानी है। लेखिका के पाश्चात्य जीवन शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है। उन्मुक्तता और मर्यादा के हानि लाभों को खोला गया है इस कहानी में। मिसेज शंकर एबनार्मल हैं, ये वाक्य भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है। बरसों बरस से भारतीयों को एबनार्मल बता कर उन्हें संस्कारित करने का प्रयास पश्चिम द्वारा होता रहा है। ये कहानी उन सारे प्रयासों का एक सुदृढ़ तथा सटीक उत्तर है। उत्तर जो उसी भाषा में दिया गया है जिस भाषा में प्रश्न होता है। लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है।

'वह कोई और थी कहानी' एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है। विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिए अपने साथी की हर बात को सहन करना। ये कहानी का एक पक्ष है, किंतु, दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि ये विवाह नागरिकता लेने के लिए न होकर प्रेम के चलते किया गया हो...? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थाई नागरिकता जैसे तकनीकि शब्दों के अर्थ कहानी में आम पाठक के लिए सरलता से आते हैं। ये कहानी एक अलग प्रकार से पुरुष विमर्श की कहानी है। पुरुष विमर्श, जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है। समलैंगिकता के बाद पुरुष विमर्श पर कहानी लिख कर लेखिका ने मानो निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श नाम पर जो एकपक्षीय लेखन पिछले कई दिनों से चल रहा है उसका प्रतिकार है ये कहानी।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने अनोखे विषयों के लिए चर्चित रहती हैं और इस संग्रह की कहानियों में भी वह विविधता, वह अनोखापन है। नए और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिए चुनने की लेखिका की ज़िद उनकी कंहानियों को भीड़ से अलग बनाती है। और इस संग्रह की कहानियों में भी तो ज़िद लगभग हर कहानी में नजर आती है।

संपर्क : पी.सी.लैब, सम्राट काम्पलेक्स बेसमेंट,
बस स्टेंड के सामने सीहोर, (म.प्र.)466881, मो. 9977855399